मुंबई विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग

द्वारा अमृतलाल नागर जन्मशती के अवसर पर आयोजित

"अमृतलाल नागर जन्मशती राष्ट्रीय संगोष्ठी"

दि. 03 एवं 04 मार्च 2017 (द्वि-दिवसीय)

राष्ट्रीय संगोष्ठी के बारे में...

अमृतलाल नागर बीसवीं सदी के महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। हिंदी के गंभीर कथाकारों में वे सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। उनके रचनाकर्म की लंबी यात्रा है। पाँच दशकों से भी दीर्घकाल तक उन्होंने लेखन किया है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनका लेखन बहुआयामी है। छायावाद से आरंभ हुआ उनका रचनाकर्म आगे चलकर व्यावहारिक और यथार्थवादी कैनवास पर खड़ा मिलता है। उन्होंने उपन्यास, कहानी और अन्य गद्य लेखन में परंपरा और आधुनिकता का बराबर निर्वाह किया है। अपनी वैचारिकता और लेखन को उन्होंने किसी कटघरे में क़ैद न करते हुए समाजवादी और मानवतावादी भूमिका निभाई है। उन्होंने न परंपरा से मुँह मोड़ा है ना आधुनिकता और आध्यात्मिकता से। स्वस्थ समाज और मानवता के लिए आवश्यक तत्वों को साथ लेकर उन्होंने सामाजिक यथार्थ को प्रकट करते हुए भविष्य के सपने भी संजोए हैं। उनकी रचनाओं में गहरी सामाजिकता मिलती है। हाशिए पर खड़ा समाज उसकी समस्याएँ, शोषण, उत्पीड़न और कुरीतियों के चित्रण में उनका मानवतावाद स्पष्ट दिखाई देता है। वे गहरे मानवतावादी कथाकार हैं। भारतीय इतिहास के अनेक अंश उनकी रचनाओं में मिलते हैं। इतिहास, परंपरा और महत्त्वपूर्ण नायकों का पुनर्मूल्यांकन उनकी रचनाओं में हुआ है। जनसंस्कृति का साक्षात्कार भी नागर जी की रचनाओं से होता है।

नागर जी केवल शहरी मध्यवर्ग के चितेरे कथाकार नहीं है। शहरी जीवन के छविकार के साथ ही साथ उनके लेखन के कई आयाम, खूबियाँ और विशेषताएँ हैं। 'नाच्यौ बहुत गोपाल', 'बूँद और समुद्र', 'शतरंज की मोहरें' और 'सुहाग के नूपुर' इन उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्याएँ, पीड़ा, त्रासदी और शोषण का चित्रण हुआ है। 'खंजन नयन' और 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास दलित समाज जीवन, उनके शोषण तथा पीड़ा की कथा कहते हैं। 'अमृत और विष' उपन्यास मानवता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। नागर जी प्रेमचंद के बाद एक बहुत ही अच्छे और बड़े क़िस्सागो हुए। क़िस्सागोई उनके कहानियों की आत्मा है। उनकी कहानियों में लखनवी अंदाज मिलता है। रहस्य को बरक़रार रखने के कारण उनकी कहानियाँ रोचक हैं। समाज, व्यवस्था और लोक के अनेक आयाम उनकी कहानियों में चित्रित हुए हैं। बच्चों के लिए बाल साहित्य भी उन्होंने लिखा है। उसकी खूबसूरती के कारण बच्चों के साथ-साथ उसे बड़े भी पढ़ते हैं। नागर जी की व्यंग्य रचनाएँ और नाटक अत्यंत महत्त्वपर्ण हैं। उन्होंने फ़िल्मों के लिए पटकथाएँ लिखी हैं। उनका 'ग़दर के फूल' संस्मरण बहुचर्चित है। संपादन और अनुवाद के क्षेत्र में भी नागर जी ने अपना योगदान दिया है। नागर जी के समग्र लेखन का केंद्र मानवता है।

नई सदी और विमर्शों के दौर में नागर जी के साहित्य में चित्रित जीवन स्थितियाँ, शोषण, आज भी यथावत मौजूद हैं। इसलिए उनकी रचनाएँ आज प्रासंगिक लगती हैं। उनके विपुल साहित्य के पुर्नपाठ की आज आवश्यकता महसूस हो रही है। आज के समाज को समझने के लिए, उसकी समस्याओं को समझकर मानवता की स्थापना और विकास हेतु उनका साहित्य वर्तमान में लाभप्रद है। मुंबई विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग इसी आवश्यकता की पूर्ति में नागरजी की जन्मशती के अवसर पर उनके समग्र रचना संसार पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। इस सारस्वत आयोजन में आप सादर आमंत्रित हैं.....

अमृतलाल नागर जन्मशती द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में चर्चा, विचार-विमर्श के लिए निम्नलिखित विषय रखे हैं। अत: किसी एक विषय पर शोध आलेख आमंत्रित हैं.....

शोध आलेख के विषय -

1. अमृतलाल नागर के उपन्यास
2. अमृतलाल नागर की कहानियाँ
3. अमृतलाल नागर के नाटक
4. अमृतलाल नागर का बाल साहित्य
5. अमृतलाल नागर का कथेतर गद्य एवं व्यंग्य

शोध आलेख भेजने हेतु दिशानिर्देश...

राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध आलेख प्रस्तुति के लिए आपको शोध आलेख Kruti Dev 010 फॉंट और 16 फॉंट साइज़ में Word File तथा PDF में ई-मेल sachin.hindi@mu.ac.in पर दि. 24 फरवरी 2017 तक भेजना होगा। चयनित स्तरीय शोध आलेख ISBN क्रम वाले पुस्तक में प्रकाशित किए जाएँगे।

संगोष्ठी में सहभाग हेतु दिशानिर्देश...

1. अध्यापकों के लिए पंजीकरण शुल्क रु 1000/- होगा। शोधार्थी के लिए पंजीकरण शुल्क रु 500 होगा।
2. पंजीकरण शुल्क डी.डी. द्वारा अग्रिम या संगोष्ठी के पहले दिन नगद जमा कर सकते हैं।
3. डी.डी. द्वारा शुल्क भेजनेवाले प्रतिभागियों को डी.डी. Finance and Account Officer, University of Mumbai, Mumbai के नाम से निकालकर अध्यक्ष/संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, रानडे भवन, कलिना, सांताक्रुज-पूर्व, मुंबई 400098. इस पते पर भेजना होगा।
4. संगोष्ठी के लिए पंजीकरण पत्र और डी.डी. भेजते समय लिफाफे (Envelope) पर "अमृतलाल नागर जन्मशती राष्ट्रीय संगोष्ठी" स्पष्ट अक्षरों में लिखना होगा।
5. बाहर के प्रतिभागियों के लिए रहने की व्यवस्था के बारे में संयोजक को 25 फरवरी तक ई-मेल से सूचना देनी होगी। साथ ही पंजीकरण पत्र भेजना होगा । तभी रहने की व्यवस्था संभव हो सकेगी।
6. प्रतिभागियों को टी.ए/डी. ए. नहीं दिया जाएगा।
7. पंजीकरण पत्र इस विवरणिका के साथ संलग्न है।

विनीत

अध्यक्ष
प्रो. डॉ. विष्णु सरवदे
हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय
भ्रमण ध्वनि - 8080819005
9869379534
ई-मेल - drvishnusarwade@gmail.com

संयोजक
डॉ. सचिन गपाट
हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय
भ्रमण ध्वनि- 9423641663
9689657974
ई-मेल - sachin.hindi@mu.ac.in

सहयोग - प्रो. डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, डॉ. दत्तात्रय मुरुमकर, डॉ. हूबनाथ पाण्डेय, डॉ. बिनीता सहाय, प्रा. सुनील वळवी, डॉ. प्रज्ञा तिवारी

"अमृतलाल नागर जन्मशती राष्ट्रीय संगोष्ठी"

दि. 03 एवं 04 मार्च 2017 (द्वि-दिवसीय)

फोटो

पंजीकरण पत्र

1.	**नाम**	
2.	**पद**	
3.	**विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का नाम**	
4.	**भ्रमण ध्वनि**	
5.	**ई-मेल**	
6..	**शुल्क का भुगतान**	1000/- ☐ 500/- ☐ डी.डी. ☐ नगद ☐
	डी.डी. संख्या	
	राशि	
	बैंक का नाम और तिथि	
	नगद की रसीद संख्या	
7	**शोध आलेख का विषय**	
8.	**निवास/रहने की व्यवस्था**	चाहिए ☐ नहीं चाहिए ☐
9	**पंजीकरण की तिथि**	